कैलाश पर्वत (सर्वोच्च चोटी) (6714m)

लद्दाख श्रेणी → राकापोशी श्रेणी → हरामोश श्रेणी → कैलाश श्रेणी (गांग-दिसे)

7

(B) लद्दाख श्रेणी –

यह काराकोरम और जास्कर श्रेणी के बीच है। इसकी लम्बाई 300 K.m, औसत ऊँचाई '5800 मीटर'। लद्दाख श्रेणी ही उत्तर पश्चिम की ओर बढ़कर बनाता है → राकापोशी श्रेणी (सर्वोच्च श्रेणी)

लं० - 300 K.m
औसत ऊं० → 5800 m.

— → हरामोश श्रेणी — हरामोश (सर्वोच्च चोटी ऊंचाई 7398)

सर्वोच्च श्रेणी → राकापोशी श्रेणी (सर्वोच्च श्रेणी - ऊँचाई - 7788)

→ कैलाश श्रेणी – लद्दाख श्रेणी की शाखा है जो पश्चिमी तिब्बत में अवस्थित है इसे चीन में कहा जाता है – गांगटी-दिसे

लद्दाख श्रेणी की सर्वोच्च चोटी – कैलाश शिखर (इसकी ऊँचाई 6714 मीटर)

(C) जास्कर श्रेणी –

यह लद्दाख और पीरपंजाल के बीच अवस्थित है।

यह 80° पूर्वी देशान्तर पर महान हिमालय से अलग होकर इसकी समानान्तर चलती है।

सर्वोच्च चोटी - नंगापर्वत (8126m)

जास्कर श्रेणी की सर्वोच्च चोटी – नंगापर्वत (8126 मी)

S.P ⇒ काराकोरम श्रेणी को भी कहा जाता है – कृष्णागिरि

⇒ काराकोरम श्रेणी में भारत की चार बड़ी हिमानियाँ है

काराकोरम में चार बड़ी हिमानियाँ - सबसे लंबी सियाचीन → - हिस्पार - बिआफो - बाल्टोरो

(A) सियाचीन ग्लेशियर – 75 K.m लम्बी (भारत की सबसे बड़ी हिमानी)
(B) हिस्पार हिमानी – 62 K.m लम्बी
(C) बिआफो हिमानी – 59 K.m लम्बी
(D) बाल्टोरो हिमानी – 58 K.m लम्बी

⇒ लद्दाख श्रेणी में गर्म जल के स्रोत मिलते हैं

⇒ लद्दाख श्रेणी और जास्कर श्रेणि के बीच "सिन्धु नदी" का पश्चिमोत्तर दिशा में प्रवाह है यहीं सिन्धु नदी हिमालय घाटी बनाती है यह गार्ज 'गिलगित' के पास 'बुंजी' नामक स्थान पर है।

→ इस गार्ज की लम्बाई - 560 K.m, चौ० - 10 K.m, गहराई - 5200 m.

सिन्धु का गार्ज भारत का सबसे गहरा गार्ज है।

संस्कृत भाषा

हिमालय की श्रेणी

* उत्तर से दक्षिण की ओर हिमालय तीन श्रेणियों में बंटा है
(A) महान हिमालय (हिमाद्रि)
(B) मध्य हिमालय (हिमांचल / लघु हिमालय)
(C) शिवालिक (निम्न हिमालय)

(A) महान हिमालय / आन्तरिक हिमालय / हिमाद्रि / उत्तरी हिमालय

* यह हिमालय की सबसे ऊँची श्रेणी है। अतः इसे कहा जाता है महान हिमालय
* यह हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी है अतः इसे उत्तरी हिमालय कहा जाता है
* इसकी चोटियाँ सालों भर बर्फ से ढकी रहती हैं अतः इसे कहा जाता है - बर्फीली / हिमाद्रि श्रेणी
* हिमालय और हिमांचल श्रेणी के बीच में अवस्थित
* होने के कारण यह कहलाता है - आन्तरिक हिमालय (आन्तरिक हिमालय)
औसत ऊँचाई - 6100 m
औसत चौड़ाई - 25 km
* यह संसार का सर्वाधिक ऊँची पर्वत श्रेणी है
⇒ इसका निर्माण आन्तरिक भाग में ग्रेनाइट तथा नीस चट्टान से हुई है जबकि ऊपर में टेथिस सागर के अवसाद से हुआ है।
⇒ हिमालय उत्तर की ओर - Concave (अवतल)
दक्षिण की ओर - उत्तल, आकार - तलवार के समान
⇒ हिमालय की ढाल उत्तर की ओर मन्द किन्तु दक्षिण की ओर तीव्र है।
⇒ हिमालय में 7000 मी० से अधिक ऊँची चोटियाँ 40 से अधिक है। इनमें प्रमुख है -
(i) माउन्ट एवरेस्ट (8848 m) - विश्व की सबसे ऊँची चोटी।
* यह नेपाल हिमालय में अवस्थित है इसे कहा जाता है - नेपाल में - सागरमाथा, चीन में - चोमोलुंगमा (पर्वतों की रानी)
(ii) कंचनजंघा - (8598 m) - हिमालय में भारत की सबसे ऊँची चोटी।
⇒ बछेन्द्री पाल - विश्व शिखर पर पहुँचने वाली (1984)

(iii) मकालू (8481) (iv) धौलागिरि (8172) (v) अन्नपूर्णा (8071) (vi) नंदा देवी (7817) (vii) कामेट (7756) (viii) नामचा बरवा (7756) (ix) बद्रीनाथ (7138) (x) त्रिशूल (7120)

⇒ महान हिमालय के आर-पार की जाने की मुख्य दर्रे हैं

राज्य		दर्रे
(1) J & K	—	जोजिला, बुर्जिला
(2) हिमाचल प्रदेश	—	बारालाचाला, शिपकीला

⇒ दलाई लामा + 17वाँ करमापा लामा - शिपकीला दर्रे द्वारा भारत आया था

(3) उत्तरांचल	—	थांगला, ~~मंके~~, लिपुलेख, नीति
(4) सिक्किम	—	नाथुला, जेलेपला
(5)		

Trade Route :-

(A) शिपकीला दर्रा - हिन्दुस्तान + तिब्बत हट सड़क से होकर गुजरता है यह हिमाचल प्रदेश में शिमला को तिब्बत के 'गारटोक' से मिलाता है। → शिमला + गारटोक (तिब्बत)

(B) जेलेपला - यह पश्चिम बंगाल के 'कलिम्पोंग' को तिब्बत के 'ल्हासा' से मिलाता है। कलिम्पोंग + ल्हासा

(B) मध्य हिमालय

इसे भी कहा जाता है - हिमाचल श्रेणी / लघु हिमालय / मध्य हिमालय

हिमाचल श्रेणी महान हिमालय के समानान्तर है।

चौड़ाई - 60 से 80 km, ऊँचाई - 3500-4500 m

इसकी चोटियाँ बर्फ से ढकी रहती हैं।

⇒ मध्य हिमालय की श्रेणियों में "पीरपंजाल श्रेणी", धौलाधार श्रेणी, नागतिब्बा श्रेणी, महाभारत श्रेणी / लेख

* पीरपंजाल श्रेणी :→ यह काश्मीर में अवस्थित है
  ↳ यह मध्य हिमालय की सबसे लम्बी और महत्वपूर्ण श्रेणी है

⇒ इसका विस्तार - झेलम से व्यास तक (300-400 km)

⇒ पीरपंजाल श्रेणी - जास्कर श्रेणी से अलग होता है → (काश्मीर की घाटी द्वारा)
  ↳ महान हिमालय और मध्य हिमालय के मध्य अवस्थित

* पीरपंजाल श्रेणी के प्रमुख दर्रे :⟹

(A) पीरपंजाल दर्रा – 3480 मीटर
(B) बेदिल दर्रा – 4270 मीटर सर्वाधिक ऊंचा दर्रा
(C) बनिहाल दर्रा – 2833 मीटर

} मध्य हिमालय के हैं।

Note :→ जम्मू-श्रीनगर मार्ग इसी बनिहाल दर्रे से गुजरता है।

* पीरपंजाल श्रेणी से गुजरने वाली नदियाँ → किशनगंगा, झेलम, चिनाब etc.

* धौलाधर श्रेणी – पीरपंजाल श्रेणी जहाँ से दक्षिण पूर्व की ओर आगे बढ़ती है वही कहलाती है धौलाधर श्रेणी.

* धौलाधर श्रेणी में भी हिल स्टेशन – डलहौजी, धर्मशाला, शिमला

Note :→ कश्मीर की घाटी – यह पीरपंजाल और जास्कर श्रेणी के बीच है।
⟹ 135 km लम्बी और 40 km चौड़ी इस घाटी का क्षे० 4921 वर्ग km है।

* प्लिस्टोसीन काल में यहाँ विशाल झील थी जो अब पीरपंजाल और जास्कर के अवसाद से भरी, निर्मित हुआ यही कश्मीर घाटी कहलाया।

* 'कश्मीर के झील का मैदान' भारत का सबसे ऊँचा मैदान है। इसकी औसत ऊँचाई 1585 m.

• कश्मीर को कहा जाता है – भारत का स्वर्ग, धरती का स्वर्ग

• कश्मीर में मीठे जल की दो झीलें – वुलर, डल

* डल झील – इसी के किनारे श्रीनगर बसा है।
* वुलर झील – यही भारत में मीठे जल की सबसे बड़ी झील।

• वुलर झील के किनारे दो शालीमार और निशात बाग हैं।

शालीमार – जहाँगीर
निशात – शाहजहाँ

वाहाम्ना – नरम लकड़ी

Note :- "चिल्का झील", भारत में खारे जल की सबसे बड़ी झील है, भारत की भी सबसे बड़ी झील भी यही है।

मसूरी श्रेणी :- यह उत्तराखंड में मसूरी से लैंसडाउन तक 120 km लम्बी श्रेणी है।
इसी पर प्रसिद्ध हिल स्टेशन – मसूरी, नैनीताल, रानीखेत, चकराता,

महाभारत श्रेणी :- यह मसूरी श्रेणी का ही पूर्वी विस्तार है
यह दक्षिणी नेपाल में अवस्थित है।
• इसकी सबसे ऊँची चोटी – महाभारत चोटी (3000 मी०)
• महाभारत श्रेणी के उत्तरी भाग में काठमांडू घाटी है।
काठमांडू घाटी नेपाल का हिल स्टेशन यह कहलाता है – नेपाल का स्वर्ग

Imp.
⇒ मध्य हिमालय के उत्तरी भाग में कोणधारी वन पाये जाते हैं
⇒ इसकी ढाल पर छोटे-2 घास के मैदान होते हैं इन्हें कहा जाता है, कश्मीर में – मर्ग (गुलमर्ग, सोनमर्ग)
⇒ उत्तराखंड में इसी घास के मैदान को – बुग्याल, पयार

(c) शिवालिक श्रेणी / बाह्य हिमालय / उप हिमालय

⇒ हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी है। इसकी अवस्थिति है लघु हिमालय और उत्तरी मैदान के बीच।
⇒ शिवालिक श्रेणी को ही कहा जाता है – बाह्य हिमालय/उपहिमालय
⇒ लम्बाई – पश्चिम में – पोतवार बेसिन से पूर्व में ब्रह्मपुत्र की घाटी तक 2400 K.m है।
⇒ पश्चिम बंगाल में यहाँ की नदी 'रायडक' के द्वारा अपरदन के कारण शिवालिक श्रेणी अदृश्य है।
⇒ सर्वाधिक चौड़ाई – H.P – 50 K.m
न्यूनतम चौड़ाई – Ar.P – 15 K.m
⇒ शिवालिक श्रेणी की औसत ऊँचाई लगभग 1000 मी० है।
⇒ ~~शिवालिक श्रेणी में खनिज तेल और प्राकृतिक गैस के भंडार मिलते हैं।~~

⇒ शिवालिक श्रेणी का निर्माण ऊपरी हिमालय की नदी द्वारा बहाये गये मलबे, बालू व बजरी व कांग्लोमरेट से हुआ है।
⇒ अतः तीनों हिमालय में सबसे बाद में इसी का निर्माण हुआ।
⇒ शिवालिक श्रेणी का स्थानीय नाम –
जम्मू में – जम्मू की पहाड़ी (वैष्णोदेवी मंदिर)
अरुणाचल प्रदेश – डफला, अबोर, मिरि, मिश्मी पहाड़ी
नेपाल में – चौंग श्रेणी, डुंडवा, चुरिया/मुरिया
⇒ शिवालिक श्रेणी की दो विशिष्ट रचना है ⇒
(a) ताल :- उच्च हिमाचल श्रेणी और शिवालिक श्रेणी के बीच भूतकाल की हिमानी झील है जो अब भर गयी है और इसके किनारे नगर बस गये हैं – नैनीताल, भीमताल, सातताल, रामसताल (जम्मू में) → उत्तरांचल
(b) दून / द्वार :- शिवालिक क्षेत्र में उत्थान के कारण उच्च हिमालय की नदियों का जल-जमाव हुआ, झील बनी, इसमें अवसाद का निक्षेपण हुआ फलतः झील क्षेत्र में ऊँचे मैदान बने। यही ऊँचे मैदान –
पश्चिम में → दून → जैसे → देहरादून (उत्तरांचल)
कोटादून, पाटलीदून, चौखम्बा दून
जम्मू → उधमपुर दून, कोटलीदून आदि
पूर्व में → द्वार – हरिद्वार